(कहानी)

पुण्य ध्वजा

येसे दरजे थोंगछी

खबर को सुनते ही कुंगा लामा ने अपने मोबाइल फोन पर वाट्सअप को खोला और अपने सभी गेतुक यानी शिष्यों को निर्देश जारी दिया कि-"जो जहाँ भी है, अपनी-अपनी पूजा खत्म करके तुरंत नाछांग में लौट आये। कोई और नई पूजा जीनदा (अर्थात् भक्तगण) लोगों के अनुरोध पर शुरू न करें। पाँच दिन के तासी सभी गेतुक नासांग वापस पहुँच जाने चाहिए।" अपना निर्देश जारी करने के बाद कुंगा लामा ने एक संतोष भरी साँस ली और राहत की हँसी हँसा। आजकल मोबाइल आ जाने के बाद काम करना कितना आसान हो गया है। पहले ज़माने में ऐसे निर्देश इस तरह भेजना कितना कठिन होता था। केवल कठिन ही नहीं, ऐसे निर्देश चारो तरफ आदमी भेजकर पहुँचा पाना बिल्कुल असंभव था। मोबाइल आने के बाद संसार का रूप बिल्कुल बदल-सा गया है। उसके साथ-साथ आदमियों के काम करने के तौर-तरीके तथा भावना में भी कितना परिवर्तन आ गया है। विशेषकर इस वाट्सअप एप के आ जाने के बाद लोगों को बहुत सुविधा मिलनी शुरू हो गई है। खासतौर पर सामाजिक ढंग के बहुत से काम वाट्सअप एप के जरिए आसानी से निष्पादित हो जाते हैं।

इस वाट्सअप के जरिए ही आज सवेरे ही कुंगा लामा को यह खबर मिल गयी थी। पहले का ज़माना होता तो इस खबर को कुंगा लामा को गोम्पा में पहुँचने में कम से कम आधा दिन तो लग जाता। वह भी अगर कोई अपनी ओर से आकर उन्हें यह खबर देता। मगर केवल वह ही नहीं, यह खबर सवेरे-सवेरे ही इंटरनेट तथा मोबाइल द्वारा कहाँ-कहाँ नहीं पहुच चुकी थी। यह जो सोशल मीडिया है-उसके माध्यम से इसके फैलने में समय ही नहीं लगा। यह तेजी से पूरे इलाके में फैल गई। अब तक तो यह मैसेज जिस दरजी ने भेजा है उसके घर के जितने लोग हैं उनके फेसबुक, वाट्सअप, इन्स्टाग्राम और ट्विटर सबमें यह सूचना त्वरित गति से मिल गई होगी।

हर दिन की तरह पौ फटने से पहले कुंगा लामा की नींद टूट गई थी। नींद खुलते ही उनका हाथ अपने मोबाइल फोन पर चला जाना कुंगा लामा की एक आदत बन गई है। यूँ कहें तो इसे ख़राब कहने की जगह अच्छी आदत भी कह सकते हैं। मोबाइल के खुलते ही वह अपने वाट्सअप ग्रुप को खोला। उस ग्रुप को वह खुद अपने शिष्य तथा जीनदा यानी भक्तों को जोड़कर बनाया हुआ ग्रुप है। वह एक गोम्पा यानी बौद्ध मठ का मुख्य लामा है और इस वाट्सअप ग्रुप के जरिए ही आजकल वह अपने गोम्पा के काम का परिचालन सुविधाजनक ढंग से कर पा रहा है। उनके गेतुक लोग जहाँ भी रहे इस वाट्सअप ग्रुप के जरिए उनसे आदेश अथवा सलाह लेते हैं। कुंगा लामा के जितने जीनदा हैं उनको इसी के माध्यम से कुछ खबर देना होता है, कुछ अनुरोध करना है तो इसी के द्वारा लिखकर उन्हें भेजते हैं। किसके घर में वह खुद पूजा करने के लिए जा रहा है, कौन-सा गेतुक या गेतुक के ग्रुप को कहाँ किसके घर में पूजा करने का काम सौंपा गया है, कौन-सा दिन किस काम के लिए शुभ या अशुभ है आदि ढेरों बाते कुंगा लामा इसी वाट्सअप से अपने जीनदा लोगों तक पहुँचाता आ रहा है।

आज भी कुंगा लामा ने उठते ही मोबाइल फोन उठाया ओर वाट्सअप देखा। उसमें उन्होंने अपने ग्रुप में एक मैसेज का संकेत देखा और उसे खोला। उसमें कोई दरजी नामक जीनदा ने उसे लिखा था- "लामा ला!

हमें आपको बहुत दु:ख के साथ बताना पड़ रहा है कि दो दिन के बुखार में कल रात तीन बजकर दो मिनट में हमारा प्यारा भाई तासी हमें छोड़कर चल बसा है। आपको वाट्सअप मैसेज के जरिए अनुरोध करना चाहता हूँ कि उनके शव संस्कार के लिए हमें मौ (अर्थात ज्योतिष शास्त्र में क्या करना है, नहीं करना है-देखने और जानने का कार्य करना) देख देने का कृपा करें। यथासमय में हम खुद आपके घर में उपस्थित होकर मौ में निकली हुई कार्यसूची से रू-ब-रू हो लेंगे।"

कुंगा लामा पहचान नहीं पाया कौन-से दरजी ने यह मैसेज उन्हें भेजा है। क्योंकि आस-पास के गांवो में इस नाम से कोई लोग हैं। दरजी, नरबु, तासी, खान्दु आदि नाम मोनपा जनजातियों में बहुत पाया जाता है। एक ही गांव में कम से कम छह-सात लोगों के नाम इन नामों में मिल जाते हैं। मोनपा लोगों के बीच अपनी जाति लिखने का रिवाज भी नहीं है जिससे पहचाना जा सके कौन-सा नाम किस आदमी का है। बहरहाल, कोई-कोई शिक्षित नौजवानों ने अपने नाम के बाद जात का नाम भी लिखना शुरू कर दिया है। अक्सर कई लोगों का नाम एक होने के कारण सभी लोगों के एक उपनाम भी रहते हैं, जिससे गांव में उस आदमी को जाना और पुकारा जाता है। मगर वह सब नाम ज्यादातर व्यंग्यात्मक होते हैं जिसकी वजह से लोग अपना नाम लिखते समय उस नाम का व्यवहार नहीं करते। इसलिए स्वाभाविक रूप से कुंगा लामा पकड़ नहीं पाया कि यह कौन-से गांव का कौन-सा दरजी का मैसेज हो सकता है और मरने वाला तासी कौन हो सकता है। कुंगा लामा बिस्तर से उठे ही थे, इसलिए वह मोबाइल को छोड़कर नित्य-क्रिया कर्म समापन करने हेतु निकल गए। अपने काम समाप्त करने के बाद उसने अपना मुँह-हाथ साफ किया और अपने निवास घर में बने छोसाम अर्थात घर के प्रार्थना कक्ष में प्रवेश किया। उसमें सजाई हुई बुद्ध तथा अन्य बौद्ध मूर्ति के साथ दलाई लामा की छवि के सामने चौदह खाली पात्र में पानी डालकर एक पंक्ति में रखा, शुद्ध याक के घी के तीन प्रदीप जलाये, अगरबत्ती भी जलाया और थोड़ी दूर में खड़े होने के बाद सात बार उठ-बैठ कर प्रणाम किये। उसके बाद वह अपने आसन में बैठकर मंत्र जपने लगे। यही कोई एक घंटा के बाद लामा की प्रार्थना खत्म हुई। प्रार्थना खत्म होते ही कुंगा लामा ने अपना मोबाइल फिर से खोला ताकि कोई नई खबर उन्हें फिर से मिल जाय। इस बार उन्होंने वाट्सअप के बदले फेसबुक में अपना टाईम लाइन खोला। उसमें दरजी नाम के उस आदमी के टाईम लाईन में हँसते हुई दो नवयुवक का फोटो मिला जिसके ऊपर में लिखा था-कल रात तीन बजकर दो मिनट में मेरे प्यारे भाई तासी इस संसार को त्यागकर स्वर्गवासी हो गए।"

उसके बाद उन्होंने अपने स्वर्गवासी भाई की आत्मा को उद्देश्य करके लिखा था-"तासी, तुम हमें रुलाकर अचानक क्यों चला गया? तुम्हारे इस तरह चले जाने के बाद हमारे वृद्ध माँ-पिताजी एकदम टूट से गए हैं। हमें छोड़ कर चले गए, लेकिन माँ-पिताजी को ऐसे छोड़कर तुम्हें नहीं जाना चाहिये था। तुम जब चले ही गए हो तो हम सांगे चोमदान देव (बुद्ध देव) से प्रार्थना करता हूँ, वह तुमको कईपेमे (स्वर्ग एवं परिनिर्वाण) के रास्ते में ले चलें।"

कुंगा लामा उस फोटो की जोड़ी को देखकर पकड़ नहीं पाये उनमें से कौन-सा युवक दरजी है और कौन-सा तासी। उम्र के लिहाज से भी कौन बड़ा और कौन छोटा है, कह नहीं सकते थे। उसने फिर देखा कुछ मिनट पहले ही किए गए इस अपलोड में नौ लाईक और पाँच कमेंट मिल चुका है। लाईक को देखकर कुंगा लामा को हँसी भी आ गई। उसके हँसने का कारण था उस लड़का के मर जाने पर अब तक नौ लोगों का लाइक

मिला है, यानी अच्छा लगा है। कैसा जमाना आ गया! आदमी के मर जाने पर संवेदना प्रकट करने के बजाय बोलते हैं कि अच्छा लगा। हाँ, जिन लोगों ने अपना कमेंट भेजा है उन लोगों ने तासी की मृत्यु पर अपना शोक जताया है और साथ में किसी ने अगर दरजी और उनके परिवार के प्रति संवेदना जताई है तो किसी ने तासी की आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की है। ऐसा मैसेज जिन लोगों ने भेजा है उन लोगों ने अक्ल का काम किया है! आजकल ऐसे समय में अगर सोशल मीडिया पर मैसेज देखें तो ज्यादातर लोगों के लाईक ही देखने को मिलते हैं। इसका मतलब कोई मरे तो दु:ख व्यक्त करने वालों से अधिक इस सूचना को पसंद करने वाले की संख्या होती जा रही है। किसी के मरने की खबर से लोगों को मजा आता है। इसीलिए तो उन लोगों ने लाईक दे रखा है। कुंगा लामा ने सोचा-जिन लोगों ने अपना कमेंट भेजा है उन लोगों में से किस-किस ने क्या लिखा है उस पर अपनी आँखे दौड़ाई। उसमें तीन लोगों ने केवल लिखा है 'RIP'। बिल्कुल ही केवल सौजन्य निभाने के लिए लिखा है, उन लोगों ने। केवल नरबु नाम के एक आदमी ने लिखा है- "तासी की मृत्यु का समाचार सुनकर मैं बहुत मर्माहत हूँ। वह हम मोनपा जनजातियों के तासी एक बहुत संभावनापूर्ण नौजवान था। अगर जिंदा रहता, तो वह अपने समाज के लिए बहुत मूल्यवान अवदान दे सकता था। हमारे समाज ने एक होनहार शख्स को खो दिया और मैंने अपने सबसे अच्छे से दोस्त को।"

उस आदमी का मेसेज इतने में ही खत्म नहीं हुआ। उसने असली मैसेज तो मृत तासी को भेजा है- बड़े ही भावुक स्वर में। उसमें लिखा था- "दोस्त तासी! याद है तुमने एक दिन मजाक-मजाक में कहा था कि मैं अगर आगे मर जाऊँ तो तुम मेरे लिए एक फानयोन फान लगाना, तुम अगर आगे मरे तो मैं तुम्हारे लिए फानयोन फान लगाऊँगा। मजाक-मजाक में मैंने भी उस समय हामी भरी थी। सच, तुम मुझे छोड़कर आगे चले गये हो। मैं अब गांव से बहुत दूर में हूँ। मगर मैं आ रहा हूँ। मैंने अपना जो वादा किया था उसे जरूर पालन करूंगा और तुम्हारे लिए एक पुण्य ध्वजा जरूर लगाऊँगा।"

कुछ ही समय के अंदर में उस कमेंट के उत्तर में कई लोगों ने अपना दु:ख प्रकट किया था, जैसे कि तासी नाम का वह मरने वाला आदमी दरजी का भाई न होकर नरबु का ही भाई हो।

सुबह का समय मौ देखने का सही समय होता है। उस समय आप अपना ज्योतिषशास्त्र खोलकर दिन में क्या काम करना उचित है, क्या काम करना अनुचित है, देख सकते हैं। बीमार पड़ने पर क्या पूजा करने से आदमी अच्छा होगा, मौ में वही देख लेने का अनुरोध लेकर अक्सर लोग लामा के पास आते रहते हैं। आदमी मरने पर भी कौन-से दिन में और कौन-से समय में दाह-संस्कार करना है, घर से शव निकाल कर ले जाते वक्त कौन-सी दिशा से लेकर निकलना है, कौन-कौन सी राशि के लोगों को शव के समीप आने के बजाय दूर रहना है, मृतक के नाम में कौन-से बौद्ध भगवान की मूर्ति खरीद कर गांव के गोम्पा में दान देना है आदि; सब लामा लोगों को मौ देखकर अपने जीनदा लोगों को बताना पड़ता है और जीनदा लोग उसी के मुताबिक अपना काम करते हैं। इसके लिए जरूरत है-मृत व्यक्ति की राशि का नाम। मगर जिस मृत व्यक्ति के लिए आज उसे मौ देखना है उसकी राशि क्या थी, उसे उस दरजी नाम के व्यक्ति ने लिखकर नहीं भेजा है। शायद भूल गया होगा। इसलिए कुंगा लामा ने अपना वाट्सअप ग्रुप खोला और उस आदमी को लिख कर भेजा- "आपके भाई तासी की मृत्यु की खबर पाकर दुख हुआ। 'कुनचोक सुम' ने जो भाग्य में लिख कर भेजा है उसे कोई टाल नहीं सकता। इसलिए दु:खी मत होइए। आपके अनुरोध के अनुसार मैं मौ देख दूंगा, मगर उससे पहले उनका राशि का नाम मुझे लिख भेजने की कृपा करें।"

शायद दरजी नाम का वह आदमी वाट्सअप खोलकर इसी प्रत्याशा में ही बैठा था। इसलिए साथ-साथ में उत्तर भी आ गया- "तासी का राशि-नाम था लुक (यानि मेष)। उसके मुताबिक आप उनका मौ देख दीजिए।"

कुंगा लामा राशि का नाम मिल जाने के बाद उस मृत लड़के की उम्र गिन कर देखा तो मिला कि उसकी उम्र महज बीस साल ही हुई थी। बहुत ही कम उम्र में मर गया है वह। यह जानकर कुंगा लामा का दिल कुछ पल के लिए विषादग्रस्त हो उठा। मगर अगले ही क्षण वह दिल से गायब हो गया। उसके बदले उसके मन को कर्तव्य बोध ने आकर जकड़ लिया। लामा ने अपने ज्योतिष-शास्त्र को खोल लिया और ध्यानमग्न होकर उसे देखने में लग गया। साथ-साथ में मौ में जो बातें निकल रही थी उसे वह एक कागज पर लिखता गया। काम समाप्त करने के बाद उसने सोचा मौ में जो-जो बातें निकली हैं उसे वाट्सअप से भेजूँ या कागज का एक टुकड़ा देकर किसी एक गेतुक को ही भेज दिया जाय। वैसे तो उसे अब तक किसी एक लामा को उस घर में पूजा करने के लिए कह देना चाहिए था। अंत में लामा ने निर्णय लिया कि एक लामा तुरंत मृतक के घर भेजकर साथ में कागज को भी दे दिया जाय। क्योंकि कुंगा लामा को मौ में निकली हुई सभी बातें मोबाइल में लिखने में दिक्कत होती है, उसका जो सीमित अंग्रेजी ज्ञान है वह बड़ी-बड़ी बातें लिखने के लिए पर्याप्त नहीं है। इस बार फिर कुंगा लामा ने अपना वाट्सअप ग्रुप खोला ताकि वह जान पाए सबेरे उसने अपने गेतुक लामा लोगों को जो निर्देश जारी किया था, उसका क्या असर हुआ है। उसने देखा उसका निर्देश लगभग सभी गेतुक लामा को मिल गया है और ज्यादातर लोगों ने अपने-अपने स्थान से रवाना हो जाने की सूचना उन्हें भेजी है। केवल दो गेतुक लामा जिन घरों में पूजा करने की प्रक्रिया में जुटे हैं, वह खत्म करने में और वक्त लगने की सूचना भेजी है। फिर भी समय पर उन लोगों ने गोम्पा में पहुँच जाने का वादा किया है।

चाय पीने के बाद कुंगा लामा अपने गोम्पा के ल्हागांग अर्थात गोम्पा के मूल प्रार्थना गृह में गए। वहाँ तब तक दो सीनियर लामा की अगुवाई में छोटे-छोटे गेतुक लोगों ने पूजा-पाठ करना शुरू कर दिया था। अपने मुख्य लामा को आते देख उन लोगों ने तत्काल अपना मंत्रोच्चारण स्थगित कर दिया था, ताकि उनके साथ मिलकर मंत्रोच्चारण कर पूजा समाप्त कर सकें। सबेरे की पूजा समाप्त करने के बाद ही वे लोग हाथ-मुंह धोकर खाने के लिए बैठ सकते हैं। कुंगा लामा के अपने आसन पर बैठ जाने के बाद सब गेतुक अपने लामा की प्रतीक्षा करने लगे कि वह कब अपने खोदन शुरू करें। मगर कुंगा लामा ने खोदन शुरू न करके लामा गोगते से कहा- ''गोगते, तुम लुंगदर बस्ती में चले जाओ। वहाँ किसी दरजी के भाई की मौत हो गई है। उनकी पूजा कर देना।"

'लासो गेरगान ला' अर्थात् धन्यवाद गुरुजी कहकर लामा गोगते अपने आसन से उठ पड़ा।

"और सुनो। जाते वक्त रास्ते में हमारे गेतुक लोग आते हुए मिल जायेंगे। उनमें से दो गेतुक लामा को भी साथ में लेते जाना।"

"शव के सत्कार के समय आप खुद आयेगा या मैं ही कर दूँ?"

"मैं मौ देखकर दे चुका हूँ। यह कागज है। दरजी को दे देना। दाह-संस्कार परसों ही कर सकेगा। वह भी दोपहर के बाद में। उसके लिए मुझे जाना है कि नहीं, मैं सोचकर पीछे बता दूंगा। यह कौन-सी दरजी है, मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ। अगर वहाँ समाज का एक जान-पहचान वाला शख्स है या उसका भाई, तो देख लेना। वैसे यह एक लड़का था तो मैं खुद दाह-संस्कार संबंधी पूजा करने चला जाऊंगा। नहीं, तो जरूरत नहीं पड़ेगा। तुम्हें देखने को मिलेगा ही। तब हमें बता देना। उसी के मुताबिक मैं निर्णय ले लूंगा।"

"मैं उस दरजी को पहचानता हूँ। इस बार की ग्राम पंचायत चुनाव में वह जीता है। लुंगदर बस्ती में वह अब एक लीडर के रूप में उभर कर आ रहा है।" लामा गोगते ने कहा।

"तब तो मुझे ही जाना पड़ेगा। उनसे कह दो मैं परसों सबेरे पहुँच रहा हूँ।"

"हाँ, आप अगर शव का दाह-संस्कार कर दें तो उनका मान और इज्जत बढ़ेगा। हमारे लिए अच्छा होगा, क्योंकि ऐसे लीडर लोगों को हाथ में रखने से हमारे लिए कितना अच्छा है, तो मैं चलता हूँ।"

"ठीक है।"

कुछ ही दिन में कुंगा लामा के निर्देश के अनुसार एक दो करके उनके गोम्पा के सभी गेतुक आना शुरू हो गए और पाँच दिन के अंदर सब आकर नाचांग अर्थात गोम्पा के होस्टल में पहुँच गये। सब गेतुक लोगों को मालूम था उन्हें अपने मुख्य लामा ने क्यों ऐसे बुलाया है। क्योंकि लुंगदर बस्ती में एक आदमी की मृत्यु हुई है और उन्हें अब फानयोन फान यानी की पुण्य-ध्वजा छपवाने का काम बारी-बारी से करना है। मृत आदमी की आत्मा ने अपने जीवन-काल में जितने भी पाप कर्म किए होंगे उनसे मुक्त होने हेतु और साथ में नया पुण्य संग्रह करके आत्मा जल्द ही नया जन्म ले सके, उसके लिए गाँव के आदमी लोग अपना एक-एक पुण्य ध्वजा सात दिन के मनलाम के समय गांव की किसी सुविधाजनक जगह में फहरा देते हैं। उस पुण्य ध्वजा में जो मंत्र लिखा होता है उसका प्रिंटिंग गोम्पा में ही होता है और लामा लोग ही उसकी छपाई कर सकते हैं। कोई दूसरा आदमी उसे छाप नहीं सकता है। वैसे तो विभिन्न अवसर पर लगाने के लिए तरह-तरह के बौद्ध ध्वजा दुकान में मिल जाती है। नजदीक की कलाकतांग शहर में पूजा की विभिन्न सामग्री बेचने वाले दो दुकाने हैं भी। मगर मृतक के नाम पर जो फानयोन फान है वह दुकान से खरीद कर लगा नहीं सकते। उसके द्वारा मृतक की आत्मा को कुछ लाभ नहीं होता। उसके लिए लोग दुकान से सात मीटर का सादा मार्किन कपड़ा खरीद कर उसके ऊपर मंत्र छापने का काम गोम्पा में जाकर करते हैं। मंत्र को छपवाने के लिए लोगों को रुपया पैसे लामा लोगों को देने नहीं पड़ते। केवल उन्हें मंत्र छापते वक्त जो लामा मंत्र छाप रहा है, उसे आराक यानी शराब पिलाते रहना पड़ता है। वैसे तो लामा लोगों को शराब पीना मना है, मगर मृत व्यक्ति के लिए फानयोन फान को छापते वक्त उस आराक को पीने से लामा इनकार नहीं कर सकते। क्योंकि वह आराक लामा को नहीं, मृत व्यक्ति के नाम अर्पित किया हुआ होता है और लामा को मृत व्यक्ति के नाम पर उसे पीने होते हैं। अगर मंत्र को छापते वक्त उस आराक को लामा पीकर खत्म नहीं करेंगे तो मंत्र काम में नहीं आएँगे और मृत व्यक्ति को उस ध्वजा द्वारा पाप कर्म से मोक्ष नहीं मिलेगा या पुण्य कमा नहीं सकेगा। इसलिए उस अवसर पर लामा लोगों को शराब पीने की छूट पूरी तरह से मिल जाती है और बहुत से लामा लोगों को, जिसे शराब पीने की आदत है, मगर धर्म पालन का कर्तव्य और लोक-लाज के कारण पी नहीं सकते उन्हें यह सुनहरा मौका मिल जाता है। वह लोग ऐसे सुनहरे मौके के इंतजार में रहते हैं। जिन लामाओ को पीने की आदत नहीं है वह भी ऐसे समय पर मजबूरन शराब के नशे की यातना भोगने पर मजबूर हो जाते हैं। इसलिए कुंगा लामा का वाट्सअप निर्देश मिलते ही गोम्पा के बाहर गांव में जो लामा लोग पूजा करने के लिए गए हुए थे, सब पाँच दिन के अंदर ही नाचांग में आकर उपस्थित हो गए।

दिन में विभिन्न गांव के जीनदा लोग गोम्पा में आने शुरू हो गए। जीनदा लोगों के हाथ में एक सात मीटर लंबा वाला मार्किन कपड़ा था और कंधे में एक थौला था जिसमें एक बोतल आराक और एक खाता यानी सफेद कपड़े का माला था। कुंगा लामा के गोम्पा में केवल एक ही प्रिंटिंग ब्लाक था, इसलिए एक बार में

एक ही आदमी ध्वजा छपवाने का काम कर सकता है। कुंगा लामा ने एक-एक करके गेतुक लामा लोगों को उस काम मे लगाना शुरू कर दिया। गांव वाले अपने-अपने क्रम में गेतुक लामा के पास पहुँचते और अपनी थैली से खाता निकालकर पहले लामा को पहनाते और मार्किन कपड़ा आगे बढ़ा देते। गेतुक लामा उस मार्किन कपड़ा पर मंत्र छापना शुरु करते और जब वह उस काम को कर रहे होते तब जीनदा उन्हें अपने साथ लाई हुई आराक को लामा को पिलाते रहते। एक लामा दो या तीन ध्वजा ही छाप पाता और जब वह नशे में धुत हो जाता, तो उसकी जगह कोई दूसरा लामा आकर ले लेता।

इधर नरबु ने कसम खाई थी कि वह अपने दोस्त तासी के नाम पर जरूर एक फानयोन फान लगाएगा। कॉलेज में उसकी परीक्षा चल रही था, इसलिए तासी के मरने की खबर सुनते ही वह आ नहीं सका। मगर परीक्षा खत्म होते ही वह अपने गांव की तरफ चल दिया। वह जब लुंगदर गांव में पहुँचा तब गांव के लोग अपने-अपने फानयोन फान लंबे-लंबे बाँस में गांव के रास्ते के किनारे लगा रहे थे। उसे देखकर गांव वालों ने कहा-"तुमने बहुत देर कर दी। फिर भी गोम्पा में जाकर देख सकते हो। शायद बिना पिया हुआ कोई लामा मिल जाय।"

कहकर वह आदमी ठहाका लगाकर हँसा। साथ-साथ में कई लोगों ने उसके कहकहे में साथ दिया।

"अगर नहीं मिले भी तो क्या है? मैं खुद छपवाकर ले आऊंगा।" नरबु ने जवाब दिया।

"तुम्हारे पिताजी ने फान तैयार कर फहरा दिया है। तुम्हें अलग से फान लगाने की कोई जरूरत नहीं है।"

"नहीं, मैंने अपने दोस्त नरबु से वादा किया था, मतलब उसके गुजर जाने की खबर सुनकर वादा किया था कि उसकी पुण्य आत्मा के लिए मैं जरूर अपने तरफ से एक फान लगाऊँगा। मुझे अपना वादा निभाना है। कोई लामा बिना नशे में मिल भी सकता है।"

कहकर नरबु गोम्पा की तरफ चल दिया। करीब दो घंटा बिना रुके चलने के बाद पहाड़ के ऊपर में स्थित वह कुंगा लामा के गोम्पा में पहुँच गया। गोम्पा में पहुँचकर उसने देखा गोम्पा का परिसर सुनसान पड़ा हुआ है। अन्य दिनों की तरह वहाँ कोई शोरगुल नहीं हैं। उसने लामा लोगों के सोने का रूम में जाकर के देखा तो सभी लामा नशे में धुत होकर सोए मिले। केवल जाग रहे थे तो छोटे-छोटे कुछ गेतुक। उसने एक छोटे गेतुक से प्रिंटिंग ब्लाक मांगा तो वह दौड़कर नजदीक के स्टोर से ब्लक के साथ स्याही भी ला दिया। अब नरबु ने अपने हाथों से फानयोन फान को छापना शुरू कर दिया। साथ में वह गुनगुनाकर कहने लगा-"लामा लोग ही फानयोन फान छापने से पुण्य होता है मैं यह नहीं मानता। तासी, देखो मैं तो खुद अपने हाथों से तुम्हारे लिए फान छाप रहा हूँ। बिना पीये और शुद्ध मन से। यही मेरी-तुम्हारे प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। तुम इसे स्वीकार करना।"

***

(नोट: प्रस्तुत कहानी में अरुणाचली हिंदी का प्रयोग है। विश्वास है, पाठकगण उसकी खूबसूरती को ध्यान में रखते हुए रचना का पाठ करेंगे।)

***(लेखकीय परिचय :** अरुणाचल प्रदेश साहित्य-संसार के अग्रणी एवं वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री येसे दरजे थोंगछी वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसाइटी के अध्यक्ष हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपकी असमीया एवं हिंदी भाषा में कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- 'शव काटने वाला आदमी', 'मौन होंठ मुखर हृदय', 'सोनाम' आदि। मोबा: 9485231967, ई-मेल: yeshe52@gmail.com)*